



Supervised by: Abdul Malik Mujahid

HEADOFFICE:

P.O. Box: 22743, Riyadh 11416 K.S.A. Tel: 00966-01-4033962/4043432 Fax: 4021659
E-mail: darussalam@awalnet.net.sa Website: www.dar-us-salam.com

K.S.A. Darussalam Showrooms:

- Riyadh
Tel: 00966-1-4614483 Fax: 4644945
- Jeddah
Tel: 00966-2-6879254 Fax: 6336270
- Al-Khobar
Tel: 00966-3-6692900 Fax: 00966-3-8891551

U.A.E

- Darussalam, Sharjah U.A.E
Tel: 00971-6-6632623 Fax: 5632624

PAKISTAN

- Darussalam, 32 B Lower Mall, Lahore
Tel: 0092-42-724 0024 Fax: 7354072
- Rahman Market, Ghazni Street
Urdu Bazar Lahore
Tel: 0092-42-7120054 Fax: 7320703

U.S.A

- Darussalam, Houston
P.O. Box: 79194 Tx 77279
Tel: 001-713-722 0419 Fax: 001-713-722 0431
E-mail: sales@dar-us-salam.com
- Darussalam, New York
572 Atlantic Ave, Brooklyn
New York-11217, Tel: 001-718-625 5925

U.K

- Darussalam International Publications Ltd,
226 High Street, Walthamstow,
London E17 7JH, Tel: 0044-208 520 2666
Mobile: 0044-794 730 6706 Fax: 0044-208 521 7645
- Darussalam International Publications Limited
Regent Park Mosque, 146 Park Road,
London NW8 7RG Tel: 0044-207 724 3363
- Darussalam
356-400 Coventry Road, Small Heath
Birmingham, B10 0UF
Tel: 0121 77204792 Fax: 0121 772 4345
E-mail: info@darussalamuk.com
Web: www.darussalamuk.com

FRANCE

- Editions & Librairie Essalam
135, Bd de Montmoutant- 75011 Paris
Tel: 0033-01- 43 38 19 58/ 44 83
Fax: 0033-01- 43 57 44 31
E-mail: essalam@essalam.com

AUSTRALIA

- ICIS: Ground Floor 165-171, Haldon St.
Lakemba NSW 2195, Australia
Tel: 00612 9758 4040 Fax: 9758 4030

MALAYSIA

- E&D Books SDN. BHD., 321 B 3rd Floor,
Suria KICC
Kuala Lumpur City Center 50088
Tel: 00603-21663433 Fax: 459 72032

SINGAPORE

- Muslim Converts Association of Singapore
32 Onan Road The Galaxy Singapore- 424484
Tel: 0065-440 6924, 348 8344
Fax: 440 6724

SRI LANKA

- Darul Kitab 6, Nimal Road, Colombo-4
Tel: 0094-1-589 038 Fax: 0094-74 722433

KUWAIT

- Islam Presentation Committee
Enlightment Book Shop
P.O. Box: 1813, Safat 13017 Kuwait
Tel: 00965-244 7526, Fax: 240 0057

INDIA

- Islamic Dimensions
56/58 Tandel Street (North)
Dongri, Mumbai 400 009, India
Tel: 0091-22-3736875, Fax: 3730689
E-mail: sales@IRF.net

SOUTH AFRICA

- Islamic Da'wah Movement (IDM)
48009 Qualbert 4078 Durban, South Africa
Tel: 0027-31-304-6883 Fax: 0027-31-305-1292
E-mail: idm@ion.co.za

نُبُوءَاتُ كِي كِيرَن

लेखक

सफीरुलरहमान मुबारकपुरी

इस्लामिक विश्वविद्यालय मदीना मुनव्वरा

अनुवादक

रज़ाउरहमान अंसारी



दारुस्सलाम

प्रकाशक एवं वितरक
रियाध- सऊदी अरब



विषय सूची

प्रकाशक की ओर से	१३
भूमिका	१५
मुहम्मद ﷺ वंश, पालन-पोषण और नबूवत के पहले की परिस्थितियाँ	१७
पवित्र वंश शृंखला	१७
कबीला	१७
वंश	१८
जन्म	२१
रजाअत (दूध पिलायी)	२२
हलिमा सादिया की गोद में	२२
हलीमा के घर में वरकतें ही वरकतें	२३
कुछ और अवधि हलीमा के पास	२४
सीना मुबारक का चाक किया जाना	२५
माँ की आगोशे मुहव्वत में	२५
दादा की देख-रेख में	२५
चचा की देख-रेख में	२६
सीरिया की यात्रा और बुहैरा राहिव से मुलाकात	२६
जंगे फिजार	२७
हिलफुल फुजुल	२८
व्यावहारिक जीवन	२८
सीरिया की यात्रा और हजरत खदीजा के माल से व्यापार	२९
हजरत खदीजा رضي الله عنها से विवाह	३०
बैतुल्लाह का निर्माण और हजे अस्वद के झगड़े का फैसला	३१
नबूवत से पहले आप का आचरण	३३
नबूवत और दावत	३५
नबूवत की निशानियाँ और सआदत की झलकियाँ	३५
नबूवत की शुरूआत और बह्य का अवतरित होना	३६
नबूवत की शुरूआत और बह्य नाजिल (अवतरित) होने की तिथि	३८
बह्यी का आना बन्द होना और दोबारा नाजिल होना	३९
तबलीग (प्रचार-प्रसार) का शुरूआत (आरम्भ)	४१

इस्लाम की खुल्लम-खुल्ला तबलीग	४८
आसपास के लोगों में तबलीग (प्रचार-प्रसार)	४८
सफ़ा की पहाड़ी पर	४९
हाजियों को बताने के लिए कुरैश के सलाह और मशविरे	५३
मुक़ावले की विभिन्न युक्तियाँ	५४
१. हँसी उड़ाना और घृणा तथा मज़ाक को बढ़ावा देना	५५
२. लोगों को आप की बात सुनने से रोकना	५६
३. शक और सन्देह पैदा करना और झूठे प्रोपागंडे करना	५८
४. बहस और कटहज्जती	६०
मुसलमानों को यातनायें	८०
अल्लाह के रसूल ﷺ के साथ मुशिरकों का रवैया	८६
कुरैश और अबू तालिब	८६
अबू तालिब को कुरैश की धमकी और चेतावनी	८७
कुरैश का निराला प्रस्ताव और अबू तालिब का दिलचस्प जवाब	८८
अल्लाह के रसूल ﷺ पर अत्याचार	८८
दारुल अरकम	९४
हब्शा की हिजरत	९४
मुसलमानों के साथ मुशिरकों का सज्दा	९५
मुहाजिरों की वापसी	९६
हब्शा की ओर दूसरा पलायन (हिजरत)	९६
मुसलमानों की वापसी के लिए कुरैश के उपाय	९७
मुशिरकों का आश्चर्य	१००
यातनायें एवं हत्या का पडयंत्र	१००
हज़रत हमज़ा का इस्लाम कुबूल करना	१०५
हज़रत उमर का इस्लाम कुबूल करना	१०६
हज़रत उमर के इस्लाम लाने पर मुशिरकों की प्रतिक्रिया	१०८
हज़रत उमर के इस्लाम लाने से इस्लाम और मुसलमानों की इज्जत	११०
आकर्षक प्रस्ताव	११०
सौदेबाज़ी और परित्याग	११४
अज़ाब की जल्दी	११८
सम्पूर्ण बहिष्कार	१२०
सहीफा (लिखित प्रस्ताव) फटा और बहिष्कार समाप्त हुआ	१२१
कुरैशी प्रतिनिधि मंडल अबू तालिब के पास	१२३

गम का साल	१२५
अबू तालिब की मृत्यु	१२५
हज़रत खदीजा की बँफ़ात	१२६
गम ही गम	१२७
हज़रत सौदा और फिर हज़रत आईशा से आप का विवाह	१२७
अल्लाह के रसूल ﷺ तायेफ़ में	१२८
मुशिरकों की ओर से निशानियों की माँग	१३२
चाँद का दो टुकड़े हो जाना	१३६
इस्रा और मेराज	१३७
कबीलों और आम लोगों को इस्लाम की दावत	१४२
ईमान की किरणें मक्का से बाहर	१४३
मदीना में इस्लाम	१४७
पहली बैअते अक़बा	१४८
यसरय में इस्लाम की दावत	१४८
दूसरी बैअते अक़बा	१५०
बारह नकीब	१५४
मुसलमानों की हिजरत	१५६
कुरैश दारुल नदवा में	१५७
नबी ﷺ की हिजरत	१५९
कुरैश की चाल और अल्लाह तआला की तदबीरें	१५९
अल्लाह के रसूल ﷺ का घर छोड़ना	१६०
गार (गुफा) में तीन रातें	१६१
मदीना के मार्ग पर	१६३
कुबा में आगमन	१६६
मदीना में प्रवेश	१६७
हज़रत अली की हिजरत	१६८
नबी ﷺ के परिवार की हिजरत	१६८
हज़रत सुहैब की हिजरत	१६९
कमज़ोर मुसलमान	१६९
मदीना का वातावरण	१६९
मदीना मुनव्वरा में नबी ﷺ के आमाल	१७०
मस्जिदे नववी	१७०
अज्ञान	१७१

मुहाजिरीन और अंसार में भाईचारा.....	१७२
इस्लामी समाज और इस्लामी उम्मत की तासीस.....	१७३
कुरैश की साजिशें	१७७
कुरैश के दाब-पेंच.....	१७७
युद्ध की अनुमति.....	१७८
पहला मरहला.....	१७८
दूसरा मरहला.....	१७९
तीसरा मरहला.....	१७९
चौथा मरहला.....	१७९
पाँचवा मरहला.....	१७९
झड़पें (सराया) और युद्ध (गजवात).....	१७९
गजवये बदर कुबरा	१८४
मल युद्ध और केताल.....	१८९
अबू जहल की हत्या.....	१९१
फैसले का दिन.....	१९२
दोनों पक्षों के मृतक.....	१९३
मक्का और मदीना में संघर्ष की सूचना.....	१९३
अल्लाह के रसूल ﷺ मदीने के रास्ते में.....	१९४
बन्दियों की समस्या.....	१९५
आप की बेटी हजरत रूकैया की मृत्यु और उम्में कुलसूम से	
हजरत उस्मान ﷺ की शादी.....	१९६
बदर के बाद की घटनायें.....	१९६
कैनुकाअ का युद्ध.....	१९७
सबीक का युद्ध.....	१९७
काअब बिन अशरफकी हत्या.....	१९८
सरिया-करदा.....	२००
गजवये ओहद	२०१
मुबारजत (मल युद्ध) और केताल.....	२०३
अल्लाह के रसूल ﷺ पर मुशिरकों का हमला और आप की	
हत्या की अफवाह.....	२०५
घिर जाने के बाद आम मुसलमानों का हाल.....	२०७
घाटी में.....	२०८
वार्तायें और प्रस्ताव.....	२१०
मुशिरकों की वापसी, मुसलमानों की ओर से शहीदों घायलों की देखभाल.....	२११

मदीना की ओर और मदीनों में प्रवेश.....	२१२
गजवये हमराउल असद.....	२१३
घटनायें और गजवात	२१५
रजीअ की घटना.....	२१५
वीरअ मउना की दुखद घटना.....	२१७
गजवये बनी नजीर.....	२१८
दूसरा गजवये बदर.....	२२१
गजवये अहजाब या गजवये खन्दक	२२२
शूरा और खन्दक.....	२२२
खन्दक के उस पार.....	२२४
वनू कुरैजा की गहारी और युद्ध पर उस का प्रभाव.....	२२७
अहजाब में फूट और युद्ध की समाप्ति.....	२३०
गजवये वनू कुरैजा	२३४
अबू राफेअ सलाम बिन अबी अल-हुकैक की हत्या.....	२३८
यमामा के सरदार सुमामा बिन असाल की गिरफ्तारी.....	२३९
गजवा वनू लहियान.....	२४०
सरिया ईस और जैनब बिनते रसूलुल्लाह के पति अबुल आस का	
इस्लाम स्वीकार करना.....	२४१
गजवये वनू मुस्तलिक या गजवये मुरैसीअ.....	२४२
पहली घटना.....	२४३
दूसरी घटना, इपक की घटना.....	२४४
उमरये हुदैबिया	२४९
उमरा के लिए प्रस्थान और हुदैबिया में आगमन.....	२४९
अल्लाह के रसूल और कुरैश के के बीच बात-चीत.....	२५१
हजरत उस्मान की दूत वार्ता और वैअते रिजवान.....	२५३
सुलह की कार्यवाही.....	२५४
अबू जन्दल का मामला.....	२५५
उमरा से मुसलमानों की आना-कानी और सुलह पर उन की पीड़ा.....	२५५
मुहाजिर महिलाओं का मामला.....	२५७
मुसलमानों के इस समझौते में वनू खोजाआ का सम्मिलित होना	
और कमजोर मुसलमानों के मामलों का समाधान.....	२५९
संधि का प्रभाव.....	२६०
बादशाहों और अमीरों के नाम पत्र.....	२६०
हब्शा के बादशाह नजासी के नाम पत्र.....	२६०

स्कंद्रिया और मिस्र के बादशाह मुक्रोस के नाम पत्र.....	२६२
फारस के बादशाह खुसरू परवेज के नाम खत.....	२६२
रोम के बादशाह कैसर के नाम खत.....	२६३
हारिस बिन अबी शिमर गस्सानी के नाम पत्र.....	२६८
अमीर बूसरा के नाम पत्र.....	२६९
हौजा बिन अली यमामा के हाकिम के नाम खत.....	२६९
बहरीन के हाकिम मुन्जिर बिन सावा के नाम पत्र.....	२७०
शाह अम्मान जीफर और उस के भाई के नाम खत.....	२७०
ग़ज़वये शावा या ग़ज़वये ज़ीक़द.....	२७२
ग़ज़वये ख़ैबर.....	२७५
नताह की विजय.....	२७६
शक्र की विजय.....	२७८
कुतैबा की विजय.....	२७९
दोनों पक्षों के मृतक.....	२८०
हब्श के मुहाजिरीन, अबू हुरैरह और अवान बिन सईद का आगमन.....	२८०
ख़ैबर का विभाजन.....	२८०
जहरीली बक्ररी.....	२८१
फिदक वालों की सुपुर्दगी.....	२८२
कुरा की घाटी.....	२८२
तैमा वालों की मुसालिहत.....	२८३
हजरत सफ़िया से विवाह.....	२८३
ग़ज़वये जातुरकाअ.....	२८४
तुम को मुझ से कौन बचायेगा?.....	२८४
उमराये क़ज़ा.....	२८६
मुता का संघर्ष.....	२८९
सरिया ज़ातुस सलासिल.....	२९२
ग़ज़वये फ़तह मक्का.....	२९३
मक्का के रास्ते में.....	२९५
अबू सुफ़ियान दरबारे नबूअत में.....	२९७
मक्का मुर्करमा में अल्लाह के रसूल ﷺ का प्रवेश.....	२९८
कअबा की सफ़ाई और उस में नमाज़.....	३०१
आज तुम्हारी कोई पकड़ नहीं.....	३०१
बैअत.....	३०२
अपराधियों के खून बेकार करार दिये गये.....	३०३

विजय की नमाज़.....	३०४
कअबा की छत पर विलाही अज़ान.....	३०४
मक्का में अल्लाह के रसूल का क़याम.....	३०४
उज़्ज़ा, सुबाअ और मनात की समाप्ति.....	३०५
बनू ज़जीमा के पास हजरत ख़ालिद की ख़ानगी.....	३०५
ग़ज़वये हुनैन.....	३०७
मुशिरकों का पीछा.....	३१०
ग़ज़वये तायेफ़.....	३११
ग़नीमत का माल और बन्दियों का आवंटन.....	३१२
अंसार की शिकायत और अल्लाह के रसूल ﷺ का सम्बोधन.....	३१३
हबाज़िन के लोगों का आगमन.....	३१४
उमराये जिर्झाना.....	३१६
बनू तमीम पर सख़्ती और इस्लाम स्वीकार करना.....	३१६
बनू तैय के फ़लस का ढाया जाना और अदी बिन हातिम का इस्लाम कुबूल करना.....	३१६
ग़ज़वये तबूक.....	३१९
रोमियों से टकराने के लिए मुसलमानों की तैयारी.....	३१९
इस्लामी सेना तबूक के रास्ते में.....	३२०
तबूक में २० दिन.....	३२२
दौमतुल जन्दल के ओक़ैदिर की गिरफ़्तारी.....	३२३
मदीना को वापसी.....	३२३
मस्जिदे ज़रार का ढाया जाना.....	३२४
मदीना वालों की ओर से अल्लाह के रसूल ﷺ का स्वागत.....	३२४
मुखल्लफ़ीन.....	३२४
ग़ज़वात के बारे में कुछ बातें.....	३२७
हजरत अबू बकर सिद्दीक़ का हज़ज.....	३२९
वफ़द, मुबल्लिगीन और दूसरे उम्माल.....	३३०
क्रधीला अब्दुल कैस प्रतिनिधि मंडल.....	३३२
सअद बिन बकर के सरदार ज़माम बिन सल्ला के प्रतिनिधि मंडल.....	३३४
अज़रा और बला का वफ़द.....	३३६
बनू असद बिन ख़ोज़ैमा का वफ़द.....	३३६
तुजैब का प्रतिनिधि मंडल.....	३३७
बनी फ़ज़ारह का वफ़द.....	३३८
नज़रान का वफ़द.....	३३९

तायेफ वालों का प्रतिनिधि मंडल	३४१
वनू आमिर बिन साअसआ का प्रतिनिधि मंडल	३४३
वनू हनीफा का प्रतिनिधि मंडल	३४४
शाहाने हिमयर के कासिद की आमद	३४६
हमदान का प्रतिनिधि मंडल	३४६
वनू अब्दुल मदान का प्रतिनिधि मंडल	३४७
वनू मजहज का इस्लाम	३४८
अजदशनूअ का प्रतिनिधि मंडल	३४९
जरीर बिन अब्दुल्लाह वजली का आगमन और जुलखल्सा का ढाया जाना ..	३४९
असबद अन्सी का प्रकट होना और उस की हत्या	३४९
हज्जतुल विदाय	३५१
सरिया उसामा बिन जैद	३५७
रफीक आला (अल्लाह) की ओर	३५९
विदाई संकेत	३५९
बीमारी का आरम्भ	३६०
अहद और वसीयत	३६०
नमाज के लिए अबू बकर ॐ को उत्तराधिकारी बनाया	३६२
जो कुछ था सब सदाका फरमा दिया	३६२
मुवाकर जिन्दगी का अन्तिम दिन	३६३
नजा की हालत और वफात	३६४
सहावियों का आश्चर्य और अबू बकर ॐ का मोकिफ	३६५
खिलाफत के लिए अबू बकर ॐ का चुनाव	३६७
तजहीज व तकफीन और तदफीन	३६८
खानये नवूअत	३६९
पाक पत्नियाँ	३६९
औलाद (सन्तान)	३७४
सिफात और अखलाक	३७७
चेहरा मुबारक और इस के सम्बन्ध में	३७७
नैतिकता की एक झलक	३८०

प्रकाशक की ओर से

नवी ॐ की जीवनी (सीरत पाक) उस सदा बहार फूलवारी की तरह है जिसका प्रत्येक फूल दिल और निगाह को अपनी सुन्दरता और रंगीनी से भर देता है, यह देखने वाले की अपनी दृष्टि है कि वह किसको अपने दामन में समेटता है।

यह विषय इतना विस्तार है कि हजारों किताबें अब तक इस पर लिखी जा चुकी हैं और प्रत्येक लेखक एक नये प्रकार से इस पर लिखता है परन्तु उसमें कमी रह जाती है।

दारुस्सलाम अब तक अरबी, अंग्रेजी, उर्दू, फ्रेन्च आदि में सीरत पाक पर अनेक किताबें प्रकाशित कर चुका है, उसी श्रृंखला की यह महत्वपूर्ण किताब है जिसे विश्व के प्रसिद्ध आलिम मौलाना सफीउर्रहमान मुवारकपुरी ने अरबी में लिखा है, जिस में इस विषय के माहिर लोगों द्वारा जमा की गई जानकारीयाँ एकत्रित की गई हैं और किताब व सुन्नत पर आधारित सहीह और प्रमाणित वयानों का उल्लेख है। मैंने मौलाना से कुछ दिनों पहले अनुरोध किया था कि अरबी भाषा में युवकों और विशेषकर मैट्रिक तक के विद्यार्थियों के लए एक औसत श्रेणी की पुस्तक संकलित करें जो जनहित और साधारण लोगों के समझने की हो, सहीह घटनाओं पर आधारित हो, उसका अंदाज इतना प्यारा हो कि नवयुवकों के दिल में रसूल ॐ का प्रेम और आदर बैठ जाये, उन्होंने मेरे अनुरोध को स्वीकार किया और कुछ दिनों के बाद ही "रौजतुल अन्वार" के नाम से किताब का मुस्ववदा मुझे दे दिया। किताब बहुत प्रसिद्ध हुई और बहुत सी संस्थाओं ने उसे अपने कोर्स में सम्मिलित कर लिया।

जिस से सीरिया के महल रोशन हो गये, फिर मां ने अब्दुल मुत्तलिब के पास आप के जन्म की शुभ-सूचना भिजवाई, वह खुशी-खुशी पधारे और आप को खानये कअबा में ले जाकर अल्लाह तआला से दुआ की और उस का शुक्र अदा किया और इस आशा पर कि आप का गुणगान होगा, आप का नाम मुहम्मद रखा। फिर अरब की रीतियों के अनुसार सातवें दिन अकीका और खतना किया और लोगों की दावत की।

आप को आप के पिता की लौंडी उम्मे ऐमन गोद खिलाया करती थीं, वह हब्शी नस्ल की थीं और उन का नाम बरकत था, अल्लाह ने उन पर बड़ी कृपा की, अतएव उन्होंने आप की नुबूत का दौर पाया, इस्लाम लाई और हिजरत भी की, फिर आप की वफात के पांच छः महीने के पश्चात वफात पायीं।

रजावत (दूध पिलायी) :

आप की मां के बाद सब से पहले अबू लहब की लौंडी सोवैबा ने आप को दूध पिलाया, उस समय उस का अपना जो बच्चा दूध पीता था उस का नाम मसरूह था, सोवैबा ने आप से पहले हजरत हमजा बिन अब्दुल मुत्तलिब को और आप के बाद अबू सलमा बिन अब्दुल असद मखजूमि को भी दूध पिलाया था, इस तरह ये तीनों आपके रजाई (दूध के) भाई हुए।

हलीमा सादिया की गोद में :

अरब के लोगों के यहां यह चलन था कि वे अपने बच्चों को शहर की बीमारियों से बचाने के लिए उन्हें दूध पिलाने वाली बदू महिलाओं के हवाले कर दिया करते थे ताकि उन के पट्ठे मजबूत (शक्तिशाली) और उनकी अरबी भाषा शुद्ध और सलीस हो जाए, इसी रीति के अनुसार अब्दुल मुत्तलिब को भी दूध पिलाने वाली दाई की खोज थी, इधर बनू साद बिन बक बिन हवाज़िन की कुछ महिलाएं इसी उद्देश्य से मक्का आयीं और उन के सामने नबी ﷺ को भी पेश किया गया, परन्तु जब उन्हें

मालूम होता कि आप यतीम हैं (यानी आप के पिता की मृत्यु हो चुकी है) तो वे आप को लेने से इन्कार कर देतीं। एक महिला हलीमा बिनत अबू जुवैब को कोई बच्चा न मिला, लिहाज़ा उस ने मजबूर होकर आप ही को ले लिया, मगर जब ले लिया तो उन पर सौभाग्य का ऐसा द्वार खुला कि दुनिया आश्चर्य चकित रह गयी, जिस की एक झलक आगामी पंक्तियों में देखेंगे।

हजरत हलीमा के पिता अबू जुवैब का नाम अब्दुल्लाह बिन हारिस था, और वह आप ﷺ के रजाई (दूध के रिश्ते से) नाना हुए, हलीमा के पति का नाम हारिस बिन अब्दुल उज़्ज़ा था और दोनों ही कबीला साद बिन बक बिन हवाज़िन से संबंधित थे, इस तरह हारिस के बच्चे-बच्चियां आप के रजाई भाई बहन हुए, जिनके नाम ये हैं: अब्दुल्लाह, अनीसा और जुदामा (शैमा) थीं, शैमा आप से बड़ी थीं और नबी ﷺ को गोद खिलाया करती थीं।

हलीमा के घर में बरकतें ही बरकतें :

जैसा कि पहले ही संकेत दिया जा चुका है कि जब तक नबी ﷺ हलीमा के घर में रहे, उन के घर पर बरकतों की वर्षा होती रही, हलीमा का बयान है कि जब वह आयी थीं तो उस साल अकाल पड़ा था, उन के पास एक गद्दी थी जो इतनी कमज़ोर और दुबली पतली थी कि पूरे कफिले में सब से सुस्त और मरियल चाल चलती थी, एक उंटनी भी थी परन्तु वह एक बूंद भी दूध न देती थी, हलीमा का अपना बच्चा भूख से रात-रात भर बिलकता और रोता रहता था।

परन्तु जब वह नबी ﷺ को लेकर अपने डेरे (पड़ाव) पर आयीं और गोद में उन्हें रखा तो छातियां दूध से भर गयीं, यहां तक कि आप ने शिकम सैर होकर (संतुष्ट हो कर) दूध पिया और आप के साथ हलीमा के बच्चे ने भी जी भर कर पिया, फिर दोनों आराम की नींद सो गये।

इधर उन के पति उठ कर उंटनी के पास गये तो क्या देखते हैं कि थन से दूध उबला चाहता है, अतएव उन्होंने दूध दूहा और फिर दोनों ने खूब सैर हो कर दूध पिया और बड़े सकून से रात गुज़ारी।

मक्का से वापसी में हज़रत हलीमा उसी सूखी-मरयल गद्दी पर सवार हुई और अपने साथ नबी ﷺ को भी लिया, परन्तु अब वही गद्दी इतनी तेज़ चली कि पूरे काफ़िले को काट कर आगे निकल गयी और कोई गद्दा उस का साथ न पकड़ सका।

हज़रत हलीमा का घर, बनू साद का इलाका सब से अधिक अकाल ग्रस्त था, मगर इस के बाद मक्का से वापसी पर उन का हाल यह हुआ कि जब बकरियां चर कर वापस आतीं तो उन की कोख निकली होती और थन दूध से भरे होते, पति-पत्नी खूब दूध दुहते और पीते जबकि किसी और को दूध नसीब न होता।

इस तरह लगातार उस घर पर ख़ैर और बरकत की वर्षा होती रही यहां तक कि दो वर्ष बीत गये, अतएव हज़रत हलीमा ने आप का दूध छुड़ा दिया, इस बीच आप हट्टे-कट्टे और मज़बूत हो चुके थे।

कुछ और अवधि हलीमा के पास :

हलीमा ने यह नियम बना रखा था कि वह नबी ﷺ को हर ६ महीने पर मक्का लातीं, मां और परिवार के अन्य लोगों से मिलातीं और फिर अपने इलाके बनू साद वापस ले आतीं। जब दूध पिलाने की अवधि पूरी हो गयी और दूध छुड़ा कर आप की मां के पास लायीं तो अब तक जो ख़ैर और बरकत देख चुकी थीं उस को देखते हुए यह चाहती थीं कि आप को उन्हीं के पास रहने दिया जाए, अतएव उन्होंने आप की अम्मी से कहा कि क्यों न आप बच्चे को मेरे ही पास रहने दें कि वह ज़रा और मज़बूत हो जाए? क्योंकि मक्का के संक्रामक रोगों से डर लगता है, अम्मी उस पर सहमत (राज़ी) हो गयीं और हलीमा आप को लेकर खुश-खुश अपने

घर वापस हुई, और आप लगभग दो वर्ष और वहीं रहे, फिर आप के मुबारक सीने को चाक करने की घटना पेश आई, जिस से भयभीत हो कर हलीमा और उन के पति ने आप को आप की अम्मी के हवाले कर दिया।

सीना मुबारक का चाक किया जाना :

अनस बिन मालिक का बयान है कि नबी ﷺ बच्चों के साथ खेल रहे थे कि हज़रत जिब्रील आलैहिस्सलाम आप के पास आये और आप को लिटा कर सीना चाक कर दिया, फिर आप का दिल निकाला और उस में से एक लोथड़ा निकाल कर कहा कि यह तुम से शैतान का हिस्सा है, फिर दिल को सोने के ट्रे में ज़म ज़म से धोया, फिर उसे उसी तरह जोड़ दिया और उसी जगह पलटा दिया। इधर बच्चे हांपते-कांपते आप की मां यानी दायी हलीमा के पास पहुंचे और कहने लगे कि मुहम्मद की हत्या कर दी गयी है, वे लोग हांपते-कांपते वहां पहुंचे तो देखा कि रंग उतरा हुआ था।

हज़रत अनस का बयान है कि मैं आप के सीने पर सिलाई का चिन्ह देखा करता था।

मां की आगोशे मुहब्बत में :

इस घटना के बाद नबी ﷺ को मक्का पहुंचा दिया गया और आप ने अपनी मां की मुहब्बत के साथे में अपने परिवार वालों के साथ कोई दो वर्ष बिताए, फिर मां, दादा, और उम्मे ऐमन के साथ मदीने की यात्रा की, मदीना में आप के पिता की कब्र भी थी और दादा का ननिहाल भी, आप मदीना में एक महीना रुक कर वापस हुए तो रास्ते में आप की अम्मीजान (मां) बीमार पड़ गयीं और अब्बाव पहुंच कर उन की मृत्यु हो गयी, वहीं उन्हें दफ़न कर दिया गया।

दादा की देख-रेख में :

अब बूढ़े अब्दुल मुत्तलिब आप को लेकर मक्का पहुंचे, उन के दिल पर आप की इस नई मुसीबत के एहसास का गहरा घाव था, अतएव आप के

लिए उन के दिल में ऐसी प्रेम-भावना जागृत हुई कि स्वयं उन के अपने बेटों के लिए भी ऐसी चाहत न जगी थी, वह आप का बड़ा ख्याल करते, अपनी सन्तान से भी बढ़ कर चाहते, खूब इज्जत देते, उन का विशेष बिस्तर जिस पर कोई और न बैठ सकता था उस पर आप को बिठाते, पीठ पर हाथ फेरते, आप की गतिविधियों को देख कर प्रसन्न होते और विश्वास करते थे कि भविष्य में आप की निराली शान होने वाली है, लेकिन अभी नबी ﷺ की आयु केवल आठ वर्ष दो महीने दस दिन हुई थी कि अब्दुल मुत्तलिब की मृत्यु हो गयी।

चचा की देख-रेख में :

अब आप के चचा अबू तालिब ने आप के पालन-पोषण का बीड़ा उठाया, यह आप के पिता के सगे भाई थे, वह भी आप से खास मुहब्बत और प्रेमभाव का व्यवहार करते थे, वह धनवान तो न थे लेकिन आप के भरण-पोषण की जिम्मेदारी लेते ही उन के थोड़े से माल में इतनी बरकत होने लगी कि एक आदमी का खाना पूरे परिवार के लिए पर्याप्त हो जाता, स्वयं नबी ﷺ भी धैर्य और संयम के नमूना थे जो कुछ मिलता उसी पर संतुष्ट रहते।

सीरिया की यात्रा और बुहैरा राहिब से मुलाकात :

जब आप की आयु १२ वर्ष (और कहा जाता है कि १२ वर्ष दो महीने दस दिन) हुई तो अबू तालिब ने व्यापार के उद्देश्य से सीरिया जाने की योजना बनाई, आप को उन से अलग होना बहुत खला, जिस से अबू तालिब भी बहुत प्रभावित हुए और आप को अपने साथ ले लिया। जब काफिला सीरिया की सीमा में पहुंचा और बसरा के निकट पड़ाव डाला तो बहीरा नाम का ईसाईयों का एक बड़ा राहिब, अपने गिर्जा से निकल कर उन के पास आया और काफिले के बीच गुजरता हुआ नबी ﷺ के पास पहुंचा और आप का हाथ पकड़ कर कहने लगा।

“वह दुनिया के सरदार हैं, अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह ने इन्हें दुनिया के लिए रहमत बना कर भेजा है।” लोगों ने पूछा, आप को यह कैसे मालूम हुआ?

उस ने कहा, “तुम लोग जब घाटी के इस ओर आए तो कोई पत्थर या पेड़ ऐसा न था जो सज्दा के लिए झुक न गया हो, और ये दोनों चीजें नदी के अलावा किसी और को सज्दा नहीं करतीं, फिर मैं उन्हें मुहरे नबूअत (नबी की मुहर) से भी पहचानता हूं जो कंधे के नीचे नर्म हड्डी के पास सेब की तरह है, और हम उन्हें अपनी किताबों में भी पाते हैं।”

फिर उस ने काफिले का स्वागत किया और अबू तालिब से कहा कि आप को वापस कर दें, सीरिया न ले जाएं, क्योंकि यहूदियों और रोमियों से खतरा है, इस पर अबू तालिब ने आप को मक्का भेज दिया।

जंगे फिजार :

जब आप की आयु २० वर्ष की हुई तो ज़िकादह के महीने में ओकाज़ के बाजार में एक लड़ाई छिड़ गयी, इस लड़ाई में एक ओर कुरैश और कनाना के कबीले थे और दूसरी ओर कैस ऐलान के कबीले, दोनों में घमासान का युद्ध हुआ, दोनों पक्षों के कई आदमी मारे गये, लेकिन फिर उन्होंने सुलह कर ली और तय किया कि दोनों पक्षों के मारे गये लोगों की गिनती की जाए, जिधर अधिक लोग मारे गये हों वह पक्ष खून बहा ले ले, इस के बाद युद्ध समाप्त हो गया और आपसी गिले शिकवे मिटा दिये गये।

इस युद्ध में अल्लाह के रसूल ﷺ भी मौजूद थे और अपने चचाओं को तीर थमाया करते थे, इस युद्ध का नाम जंगे फिजार इस लिए पड़ा कि उस में हराम महीने की हुर्मत पामाल की गयी थी। “फिजार” बदकारी को कहते हैं। फिजार नाम की यह चौथी घटना थी, हर साल एक घटना घटती रही, उपरोक्त घटना अंतिम थी, इस से पहले की तीनों घटनाओं में हल्के-फुल्के झगड़े हुए थे, लड़ाई केवल इसी चौथी घटना में हुई थी।

हिलफुल फुजूल :

इस युद्ध के बाद ही जीकादह के महीने में पांच कुरैशी कबीले के बीच एक समझौता हुआ जिसे हिलफुल-फुजूल कहते हैं। उन कबीलों के नाम ये हैं:

बनू हाशिम, बनू अल-मुत्तलिब, बनू असद, बनू जुहरा और बनू तैम।

इसका कारण यह था कि जुबैद (यमन का एक आदमी) व्यापार के लिए सामान लेकर मक्का आया, आस बिन वायल ने उस से सामान खरीद लिया लेकिन भुगतान नहीं किया, उस ने बनू अब्दुल-दार, बनू मखजूम, बनू जमह, बनू सहम, और बनू अदी मे गुहार की, लेकिन किसी ने ध्यान न दिया, अतएव उस ने जबल अबू कैस (पहाड़ का नाम) पर चढ़ कर कुछ अपनी मजलूमियत का नक्शा खींचते हुए कुछ काव्य-छन्द लिखे और आवाज़ लगाई कि कोई उस का हक दिलाने के लिए उस की सहायता करे, इस पर जुबैर बिन अब्दुल मुत्तलिब ने दौड़-धूप की, अतएव उपर्युक्त कबीले के लोग बनू तैम के सरदार अब्दुल्लाह बिन जुद्आन के घर में इकट्ठा हुए और आपस में मिल कर यह प्रतिज्ञा किया कि मक्का में जो भी मजलूम या सताया हुआ दिखे, चाहे वह मक्का का रहने वाला हो या कहीं और का, ये सभी उस के समर्थन में उठ खड़े होंगे और जुबैदी का हक लेकर उस के हवाले किया।

इस समझौते में अल्लाह के रसूल ﷺ भी अपने चचाओं के साथ मौजूद थे और नबूवत मिल जाने के बाद भी कहा करते थे कि मैं अब्दुल्लाह बिन जुद्आन के घर पर ऐसे समझौते में शामिल हुआ कि मुझे उस के बदले लाल उंट भी पसन्द नहीं, और यदि मैं उस के लिए इस्लाम के दौर में भी बुलाया जाता तो उसे अवश्य ही स्वीकार करता।

व्यावहारिक जीवन :

ज्ञात हो कि नबी ﷺ यतीम पैदा हुए, और दादा और फिर चचा की

देख-रेख में पालन-पोषण हुआ, पिता से जो कुछ भी सम्पत्ति मिली थी उस से कुछ होने वाला न था, लिहाज़ा जैसे ही आप हल्के-फुल्के काम के योग्य हुए अपने दूध के भाईयों के साथ बनी साद के इलाके में बकरियां चराने लगे, फिर जब मक्का आये तो वहां भी कुछ कैरात के बदले मक्के वालों की बकरियां चराने लगे। कैरात, एक दीनार का २०वां या २४वां भाग होता है, जिस का मूल्य इस ज़माने में मुश्किल से ८०-९० रुपये हो सकेगी।

आरम्भ में बकरियां चराना नबियों की सुन्नत है, एक बार नबी ﷺ ने नबूवत मिल जाने के बाद फरमाया: “कोई नबी नहीं गुज़रा, मगर उस ने बकरी ज़रूर चराई है।”

फिर जब आप जवान हुए तो सम्भवतः आप व्यापार करने लगे, क्योंकि कुछ रिवायतों में आया है कि आप साईब बिन अबी साईब के साथ मिल कर व्यापार करते थे, आप एक अच्छे साझीदार थे, न बहस करते थे, न झगड़ते थे।

आप मामले में बहुत ही ईमानदार, सच्चे और परहेज़गार मशहूर थे, और जीवन के समस्त क्षेत्रों में आप का यही तरीका था, अतएव आप को “अमीन” के नाम से भी पुकारा जाने लगा।

सीरिया की यात्रा और हज़रत खदीजा के माल से व्यापार:

आप की शहरत सुनकर खदीजा ने आप को व्यापार के लिए अपनी पूंजी की पेशकश की, वह प्रतिष्ठा और सम्पत्ति दोनों दृष्टि से कुरैश की सर्वोत्तम महिला थीं, और लोगों को कुछ पारिश्रमिक पर अपना माल व्यापार के लिए दिया करती थीं, उन्होंने इस पेशकश के साथ यह भी कहा कि वह आप को सब से अच्छा पारिश्रमिक देंगी।